



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

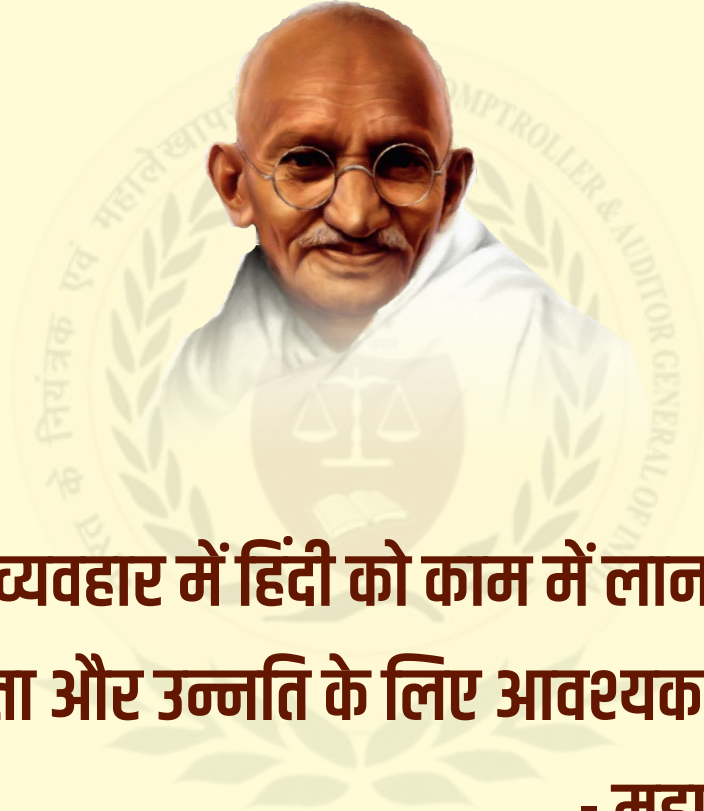


कालिंदी

वार्षिक गृह पत्रिका
द्वितीय अंक: 2023

मूल्य
राजभाषा के
प्रति निष्ठा

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (कृषि, खाद्य एवं जल संसाधन)
आठवां व नवां तल, संकाय भवन, 10 बहादुर शाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली- 110002



**"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की
एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है."**

- महात्मा गाँधी

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रिका-परिवार

संरक्षक

सुश्री गुरवीन सिद्धू, महानिदेशक

परामर्शदाता

श्री अजय कुमार झा, निदेशक(प्रशासन)

संपादक मंडल

श्री अमित कुमार मिश्रा, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)

श्री राज कुमार तिवारी, हिंदी अधिकारी

सह-संपादक

कुमारी बबीता, कनिष्ठ अनुवादक

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, अतः संपादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अस्वीकरण

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं, रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार व भावनाएँ हैं। कार्यालय या संपादक मण्डल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाकारों द्वारा की गई घोषणा के अनुसार, हम मानते हैं कि यह उनकी अपनी मौलिक रचनाएँ हैं तथा कहीं और प्रकाशित नहीं की गई हैं। ये रचनायें किसी अन्य स्रोत से कॉपी या प्राप्त नहीं की गई हैं ऐसे किसी भी कॉपीराइट उल्लंघन के मामलों के लिए कार्यालय या संपादक मण्डल उत्तरदायी नहीं है।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सौकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **‘देसिल बयना सब जन मिट्टा’** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **‘कंठस्थ’** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **‘विश्व हिंदी सम्मेलन’** में **‘न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन’** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

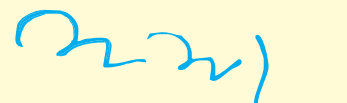
राजभाषा विभाग की एक नई पहल **‘हिंदी शब्द सिंधु’** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **‘लीला हिंदी प्रवाह’** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023


(अमित शाह)

महानिदेशक का सन्देश



राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका 'कालिंदी' के द्वितीय अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यधिक हर्ष हो रहा है। हमारे कार्यालय द्वारा प्रकाशित की जा रही वार्षिक गृह-पत्रिका 'कालिंदी' का उद्देश्य कर्मिकों सहित सभी पाठकों के हिन्दी के प्रति लगाव को प्रोत्साहन देना है। कार्यालय में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा पत्रिका-प्रकाशन हेतु रचनाएँ प्रस्तुत करने में जो उत्साह दर्शाया गया है वह अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी का प्रचार एवं प्रगति सुनिश्चित करना ही इसका मूल उद्देश्य है।

मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी कार्यालय के कर्मचारी पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देंगे एवं पत्रिका की विषय-वस्तु को उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक बनाने का निरंतर प्रयास करेंगे। 'कालिंदी' पत्रिका हमारे लिए केवल भाषा का नहीं, अपितु गौरव का विषय है।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की सदैव कामना करती हूँ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

गुलशन

महानिदेशक लेखापरीक्षां
(कृषि खाद्य एवं जल संसाधन)

निदेशक का सन्देश



हमें गर्व हो रहा है कि हमारे राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय की तरफ से हमारी हिंदी गृह-पत्रिका, कालिंदी, अपने दूसरे अंक के लिए तैयार है। आपके समक्ष इसे प्रस्तुत करते हुए हमें बहुत अधिक प्रसन्नता हो रही है।

इस अंक में हमने कई महत्वपूर्ण और रोचक विषयों पर लेख शामिल किए हैं। हमारी टीम ने सभी लेखकों के विचारों को समेकित कर इसे पठनीय और रोचक बनाने के साथ-साथ इसे ज्ञानवर्धक बनाने का भरपूर प्रयास किया है। इस पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु हमें आपके सुझावों और सहयोग की सदैव अपेक्षा रहेगी, ताकि हम इसे आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप बना सकें।

कालिंदी के इस अंक में हमने सरकारी योजनाओं, नीतियों, और कार्यक्रमों के बारे में विस्तृत जानकारी साझा की है। इसके अलावा, हमने शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, कला, साहित्य, और सामाजिक मुद्दों पर भी लेखों को सम्मिलित किया है। हमें यकीन है कि आपको इस विषय-संग्रह का आनंद आएगा और आप इसे पढ़कर प्राप्त ज्ञान को अपने आस-पास के लोगों के साथ साझा करेंगे।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के अनंत शुभकामनाएं !

INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अजय कुमार झा

(अजय कुमार झा)

निदेशक (प्रशासन)

संपादक की कलम से...



सर्वप्रथम आप सभी लोगों को हमारी हिंदी गृह-पत्रिका, कालिंदी, के पहले अंक को अपना समर्थन, प्रशंसा और प्यार देकर सराहने के लिए आपका बहुत-बहुत आभार। हम आपके भेजे गये संदेशों से अभिभूत हैं कि आप हमारे प्रयास को समझते हैं।

कालिंदी के दूसरे अंक के लिए हमने अपने लेखकों से अद्यतित और रोचक लेख प्राप्त किए हैं, जो न केवल नए संदर्भों को उजागर करते हैं, बल्कि समाज के विविध मुद्दों पर भी अलग-अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

हमारे संदेशों का लक्ष्य है राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करना और अपने पाठकों को साक्षात्कार, लेख, और साहित्य के माध्यम से हिंदी के सौंदर्य को और गहराई में ले जाना। हम चाहते हैं कि हमारे पाठक हमारी पत्रिका के माध्यम से संपूर्णता और विविधता को महसूस करें, और हमें अपनी प्राकृतिक भाषा में समृद्धि और सुंदरता के लिए प्रेरित करें।

हम आपके ज्ञान, अनुभव, और विचारों का सम्मान करते हैं और आपको इस अंक को पढ़कर आपके समृद्ध मनोवृत्ति और सामाजिक जागरूकता में सहयोग करने का आमंत्रण देते हैं। हम अपने पाठकों से सक्रियता और उत्साह की आशा करते हैं, जिसे हम आपके साथ साझा कर सकें, और हमें इसे और अधिक प्रभावी बनाने का मौका मिले।

हमें गर्व हो रहा है कि हमारे राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय की तरफ से हमारी हिंदी गृह-पत्रिका, 'कालिंदी' अपने दूसरे अंक के लिए तैयार है। इस अंक को आपके सामर्थ्य और समर्पण के बाद तैयार किया गया है, और हमें यह विश्वास है कि यह आपको पूरी तरह से प्रभावित करेगी।

कालिंदी के इस अंक का मुख्य उद्देश्य है राजभाषा के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहित करना और हमारे समाज को अपनी भाषा और संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करना। हमने इस अंक में विभिन्न कविताओं और लेखों को शामिल किया है, जिनमें हमारी धरोहर की अमूल्यता को दर्शाया गया है। हमने यहां यह अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है कि हमारी भाषा हमारी पहचान है और हमें इसे नित्य-प्रतिदिन और भी समृद्ध करने की जरूरत है।

इस अंक में हमने अनेक सामग्री शामिल की है जो राजभाषा के प्रसार को सुनिश्चित करने में सहायता करेगी। हमने कार्यालय में हो रहे विभिन्न कार्यक्रमों, के बारे में अद्यतन और महत्वपूर्ण जानकारी साझा की है। हमारा लक्ष्य है कि हम आपको इस प्रकार की सामग्री से अवगत कराएं और आपके साथी संगठनों के साथ बेहतर संवाद सुनिश्चित करें।

हमारी संपादकीय टीम ने इस अंक को एक सहज रूप देने का प्रयास किया है, और हमें उम्मीद है कि आपको इसका आनंद आएगा। हम आपके सुझाव और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं, जो हमें और अधिक मजबूत और समृद्ध करेंगे।

शुभकामनाओं सहित !

- अमित कुमार मिश्रा
वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

अनुक्रमणिका



शीर्षक	पृष्ठ	रचनाकार के नाम	पदनाम
1 काशी	9	श्री अमित कुमार मिश्रा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
2 जीवन	10-11	श्री राज कुमार तिवारी	हिंदी अधिकारी
3 पेड़	14	हर्षुल, सुपुत्री श्री प्रवीण कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4 आज के हालात	14	श्री अशोक कुमार महतो	लेखापरीक्षक
5 ई-ऑफिस आवश्यकता और चुनौतियाँ	15-16	श्री सुमित कुमार	सहायक पर्यवेक्षक
6 वक्त	17	श्री हरि नारायण दीक्षित	डी.ई.ओ.
7 दोस्ती	18	सुश्री मीना कुमारी	डी.ई.ओ.
8 मेरी मम्मी	19	सुश्री मीना कुमारी	डी.ई.ओ.
9 रोचक तथ्य	20	सुश्री बबीता	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
10 रक्षाबंधन	21	सुश्री मीना कुमारी	डी.ई.ओ.
11 श्रेष्ठ विचार	22	सुश्री मीना कुमारी	डी.ई.ओ.
12 हिंदी	23	सुश्री मीना कुमारी	डी.ई.ओ.
13 मेरी आह	24	श्री हरि नारायण दीक्षित	डी.ई.ओ.
14 रोजगार की चाहत	25	श्री हरि नारायण दीक्षित	डी.ई.ओ.
15 असफलता विरासत है	26	सुश्री चांदनी कुमारी	स्टेनोग्राफर
16 बेटियाँ और हमारा समाज	27	सुश्री चांदनी कुमारी	स्टेनोग्राफर
17 शम्भू	28	श्री अशोक कुमार महतो	लेखापरीक्षक
18 श्री रामचंद्र	29	श्री अशोक कुमार महतो	लेखापरीक्षक
19 गाँव	30	श्री अजय चौहान	एम.टी.एस
20 आधुनिक भारत में विपक्ष	31	श्री सुमित कुमार	सहायक पर्यवेक्षक
21 हमारा प्यारा तिरंगा झंडा	32	श्री सुमित कुमार	सहायक पर्यवेक्षक
22 एक पल	33	श्रीमती प्रीति चौधरी	लेखापरीक्षक
23 माँ	34-35	श्री धीरेन्द्र कुमार	सहायक पर्यवेक्षक
24 सुभाष चन्द्र बोस	36-37	श्री तरुण छिकारा	कल्याण सहायक
25 नन्हे बच्चों की कला (पेंटिंग्स)	38	आरुष, सुपुत्र श्री सुमित चंड्योक, व.ले.प.अ. मनस्वी खत्री सुपुत्री श्री युद्धवीर, सहायक पर्यवेक्षक अंकिता रावत, सुपुत्री - श्री संदीप रावत	
26 वो दिन	41	श्री संदीप रावत	एम.टी.एस
27 आपदाओं का दौर	42	सुश्री बबीता	कनिष्ठ, हिंदी अनुवादक
28 पहेलियाँ एवं चुटकुले	43	सुश्री बबीता	कनिष्ठ, हिंदी अनुवादक
29 मन को बड़ा करो तुम	44	आरुष चंड्योक	
30 पॉलिथीन मुक्त भारत	45	आरुष चंड्योक	
31 स्वच्छ भारत	46	आरुष चंड्योक	
32. कार्यालय की कुछ झलकियाँ	47-49		



अमित कुमार मिश्रा

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

काशी

चलिए बनारस, काशी या फिर आजकल जैसे जाना जाता है वाराणसी के बारे में कुछ मजेदार बातें जानते हैं। शुरुआत करते हैं नाम से बनारस का पुरातन नाम काशी है जिसका अर्थ संस्कृत के शब्द काशः से निकला है जिसका अर्थ होता है प्रकाश या फिर उजाला।

वही दूसरा नाम बनारस पाली भाषा से आया है। वास्तव में काशी में उत्तर दिशा में वरुणा नदी तथा दक्षिण दिशा से अस्सी नदी जाकर गंगा नदी में मिलती है इसलिए काशी को वाराणसी भी कहा जाता था, किन्तु पाली भाषा में यदि वाराणसी को लिखा जाए तो आता है बनारसी। अब कालांतर में हम बनारसी हो गए और शहर बनारस। वैसे भी बनारस का पान बहुत प्रसिद्ध है और सस्ता और अच्छा भी और आप पान खाकर वाराणसी तो बोल ही नहीं सकते, मुँह से निकलेगा तो बनारस ही। काशी की सबसे अद्भुत बात ये है की शिव महापुराण के अनुसार महादेव ने अपने सगुण रूप के लिए काशी का सृजन किया था।

काशी में महादेव ने ध्यान किया और महर्षि व्यास और सप्त ऋषि को भी काशी में ध्यान करने को कहा। महर्षि व्यास और सप्त ऋषि जब ध्यान करने काशी पहुंचे तो उन्होंने देखा की महादेव के पसीने से पूरा काशी जलमग्न था और कही भी ध्यान करने के लिए भूमि उपलब्ध नहीं थी तब मृगपति ने पूरे काशी को अपने त्रिशूल पर उठा लिया और ऋषियों को और हमें आज की काशी उपलब्ध कराई। याद रहे जब प्रलय आ रहा हो और आपके पास टाइम और रिजर्वेशन हो तो काशी आ जाएं क्योंकि पूरी दुनिया के खत्म होने के बाद भी सिर्फ काशी ही बचेगी। तभी तो मार्क ट्वेन के कहा है की काशी इतिहास, परम्पराओं और मिथिको को जोड़ कर भी उनसे दुगुनी से भी ज्यादा पुरानी है।

आप आजतक ग्रेट वाल ऑफ चीन (220 BC) को पुराना मानते थे तो ये समझ लें की काशी में भगवान बुद्ध ने सन 528 BC में सारनाथ में अपना पहला उपदेश दिया था। तब भी बनारस एक बड़ा फलता फूलता शहर था। बनारस की एक और अद्भुत बात ये है की ये ही वो जगह है जहाँ पर माता गंगा उत्तरवाहिनी हो जाती हैं, गोमुख से लेकर बंगाल की खाड़ी तक गंगा उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर बहती है किन्तु शायद बनारस को छूने की लालसा उनमें भी रही होगी तभी तो वो बनारस को छूने के उद्देश्य से शूलतंकेश्वर महादेव मंदिर से दक्षिण से उत्तर की ओर पूरा यूटर्न लेकर बनारस के घाटों की ओर चल देती है।

माता गंगा के इस प्रयास से काशी को मिलती है पतित पावनि मुक्ति दायनी गंगा और गंगा को मिलता है उनकी इतनी लम्बी और थका देने वाली यात्रा का सबसे सुखद पल काशी। भयंकर वेग और ध्वनि वाली गंगा की काशी में शांति और सुखद सरल गति व्याकुल से व्याकुल मन को शांत चित्त कर देती है। इन्हीं गंगा के घाटों में है बनारस की आत्मा को दर्शाते लाखों किस्से और सैकड़ों मंदिर। उन सैकड़ों मंदिरों में से एक मंदिर की बात करते हैं जिसका संभवतः आपने नाम भी नहीं सुना होगा वो है रत्नेश्वर महादेव मंदिर। यह मंदिर अपनी नींव पर करीब करीब 9 डिग्री के कोण पर झुका हुआ है, जबकि 3.99 डिग्री के कोण पर झुका लीनिंग टावर ऑफ़ पिसा पूरी दुनिया में अपने झुकने के लिए जाना जाता है। इसी तरह एक और मंदिर है तिलभांडेश्वर महादेव मंदिर। यह वो मंदिर है जिसका प्रत्येक वर्ष एक तिल के दाने के बराबर महादेव के शिवलिंग का आकार बढ़ जाता है। घाट के पास स्थित मंदिरों का वर्णन सबसे प्रसिद्ध और 12 ज्योतिर्लिंग में से एक श्री काशी विश्वनाथ जी के बिना पूरा नहीं हो सकता।

यह मंदिर काशी वासियों की जान है और काशी की आत्मा। जहां एक ओर अकबर ने इस मंदिर को बनवाने की अनुमति दी थी वहीं उसके पोते औरेंजेब ने निस्ते-नाबूत करने की। महारानी अहिल्या बाई ने मंदिर का जीर्णोद्धार सन् 1780 में कराया था और अब भारत की केंद्र सरकार ने भी अपना ध्यान इस मंदिर की ओर किया है। बनारस का एक और मंदिर है जिसकी ओर सिर्फ और सिर्फ उसके भक्तों का ध्यान है वो है संकटमोचन हनुमान जी का मंदिर।

इस मंदिर की स्थापना महाकवि तुलसीदास जी ने की थी तथा इसी मंदिर के प्रांगण में उन्होंने हनुमान बाहुक को लिखा था।

बनारस में शक्ति देने वाले मंदिरों के साथ मुक्ति देने वाले घाट भी हैं। बनारस के प्रसिद्ध चाट गोलगप्पे और छेना की मिठाईयाँ खाकर जब अंतिम समय आ जाये तो मणिकर्णिका घाट पर उस प्राणी की मुक्ति की व्यवस्था भी है वैसे भी बनारस में जाने के बाद आप कही और नहीं रह सकते इसीलिए सीधे मोक्ष। मणिकर्णिका का एक ऐसा घाट है जहां आज तक शमशान की अग्नि शांत नहीं हुई है दिन और मान्यताओं के विपरीत रात को भी यहां शवदाह किया जाता है।

इसी घाट पर होली से दो दिन पहले भस्म होली खेली जाती है और सभी 84 घाटों पर और बनारसी दिवाली के 14 दिन बाद उत्सव मनाते हैं देव दीवाली का। इसी भस्म होली और देव दीवाली, मिठाईयों और चाट, अध्यात्म और भौतिकतावाद जीवन और मृत्यु के उत्सव का नाम है बनारस, इसीलिए तो कहते हैं की काशी कबहूँ छोड़िये विश्वनाथ का धाम, मरने पर गंगा मिले जिएते लंगड़ा आम।

जीवन



राज कुमार तिवारी
हिंदी अधिकारी

जब आपके पास कुछ नहीं होता तब आपके पास कुछ कर गुजरने का मौका होता है अर्थात् जब इंसान के पास कुछ नहीं होता तो उसके पास मौका होता है बहुत कुछ करने का, लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं जो अपने दुःख दर्द को लेकर भगवान को कोसते रहते हैं की भगवान ने हमें कुछ नहीं दिया। भगवान ने आपको मौका दिया है की देख तेरी सारी चीजें खाली हैं अब तू भर उसको। इसलिए एक बात याद रखना की जब आपका भाग्य साथ न दे तब समझ जाना की अब आपकी मेहनत आपका साथ देगी।

जीवन की सच्चाई यह है कि यह हमेशा आसान या निष्पक्ष नहीं होता। जीवन चुनौतियों, संघर्षों और असफलताओं से भरा हो सकता है। हम सभी कठिन परिस्थितियों का सामना करते हैं और निराशाओं और असफलताओं से जूझते हैं। हालाँकि, यह भी सच है कि जीवन सुंदर, आनंदमय और अवसरों से भरा हो सकता है।

जीवन की वास्तविकता यह है कि हम सभी के पास चुनाव और निर्णय लेने की शक्ति है जो हमारे जीवन और हमारे आसपास के लोगों के जीवन को प्रभावित कर सकते हैं। हमारे पास अपनी नियति बनाने, अपने सपनों और जुनून को आगे बढ़ाने और दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाने की क्षमता है।

जीवन की वास्तविकता यह है कि यह लगातार बदल रहा है, और हमें नई स्थितियों और परिस्थितियों के अनुकूल और समायोजित करना सीखना चाहिए। हमें लचीला होना चाहिए और बाधाओं और चुनौतियों को दूर करने की ताकत होनी चाहिए।

जीवन की वास्तविकता यह है कि यह परिमित है, और हमारे पास इसका अधिकतम लाभ उठाने के लिए सीमित समय है। हमें अपने रिश्तों को संजोना चाहिए, अपने आसपास की दुनिया की सुंदरता की सराहना करनी चाहिए और प्रत्येक दिन को पूरी तरह से जीना चाहिए।

संक्षेप में, जीवन की वास्तविकता यह है कि यह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के अनुभवों का मिश्रण है, और यह हम पर निर्भर है कि हमें जो दिया गया है उसका अधिकतम उपयोग करना है। खुले दिल और सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ जीवन को अपनाने से हम प्रतिकूलताओं पर काबू पा सकते हैं, आनंद और अर्थ पा सकते हैं और एक ऐसा जीवन बना सकते हैं जो वास्तव में परिपूर्ण हो।

जीवन एक अनुभव और एक सफर है जो हर इंसान को अपने जीवन में तय करना होता है। इस भूमिका में, हमारा मनुष्यत्व हमें सहानुभूति, प्यार और सद्भाव के प्रतीक के रूप में चमकाता है। हमारे जीवन में हर कोण और रोग-रंजित के बीच, हमें अपनी मानवीयता की ओर सचेत होना चाहिए।

जीवन अनुभवों और गहराइयों का एक संग्रह है। हर इंसान की जीवन यात्रा में, हम अनेक परिपेक्ष्यों, संघर्षों और सुख-दुख के बीच निरंतर चलते रहते हैं। जीवन की खुशियों और दुःखों की विशेषता है, हमें उन सभी को स्वीकार करना चाहिए। हमें समझना चाहिए कि जीवन की समस्याओं और कठिनाइयों से उबरने के लिए हमें मजबूत होना चाहिए। जीवन एक आवेशमयी चुनौती है, और हमें उसे धैर्य से और सकारात्मक के साथ ग्रहण करना चाहिए।

मानवता हमारे जीवन की सबसे मूल्यवान धरोहर है। हम सभी मानव जाति के सदस्य हैं और हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करना चाहिए। मानवता की समझ और प्रशंसा के बिना, हमारा जीवन व्यर्थ हो जाता है। हमें दूसरों के प्रति सम्मान और प्यार के साथ बर्ताव करना चाहिए। मानवीय सम्बन्ध हमारी समाज की मजबूती की नींव हैं और हमें एक साथ रहने का अपनी ओर से संकल्प लेना चाहिए। हमें अन्य लोगों के साथ सहयोग करना चाहिए और उनके दुखों और सुखों को साझा करना चाहिए।

सहानुभूति हमारे दिल की गहराई से उत्पन्न होती है। यह हमें दूसरों के दुख को समझने और उन्हें सहायता देने की क्षमता प्रदान करती है। सहानुभूति हमारी मानवीयता की प्रमुख विशेषता है जो हमें अपने सामर्थ्य को दूसरों की मदद में उपयोग करने का अवसर देती है। हमें दूसरों के दुख को हल करने के लिए तत्पर रहना चाहिए और एक साथ खड़ा करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए। सहानुभूति समाज के लिए एक महत्वपूर्ण गुण है जो हमें एक दूसरे की जरूरतों को समझने और उन्हें पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

जीवन, मानवता और सहानुभूति एक-दूसरे से अभिन्न हैं और इनका संगठन हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जीवन एक अनमोल उपहार है जो हमें खुशियों के साथ दुःखों का सामना करने का अवसर देता है। मानवता हमें सबको समझने, सम्मान करने और एक-दूसरे की जरूरतों को समझने के लिए आदर्श बनाती है। सहानुभूति हमें दूसरों के दुख को समझने और उन्हें सहायता करने की क्षमता प्रदान करती है। ये सभी मानवीय गुण हमारे समाज के विकास और प्रगति के लिए आवश्यक हैं।

जीवन, मानवता और सहानुभूति हमारे जीवन के मूल्यवान पहलू हैं जो हमें एक साथ खुशहाल और समृद्ध समाज बनाने में मदद करते हैं। हमें जीवन की मूल भूमिका को समझना चाहिए और उसे ध्यान में रखते हुए अपनी मानवीय पहलुओं का विकास करना चाहिए। मानवता हमारी सबसे बड़ी धरोहर है और हमें एक-दूसरे के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। सहानुभूति हमें दूसरों के दुःख को समझने और सहायता करने की क्षमता प्रदान करती है।

इसलिए, हमें जीवन के महत्व को समझना चाहिए, मानवता को महत्व देना चाहिए और सहानुभूति को अपना धर्म मानना चाहिए। यही हमारे जीवन को सार्थक बनाने का तरीका है और एक उच्चतम स्तर की मानवीय समाज की नींव है। हमें इन गुणों को अपनी शिक्षा, संस्कार और आचरण में समाहित करना चाहिए ताकि हम सबके साथ मिलकर एक सुखी और समृद्ध विश्व का निर्माण कर सकें।

कुछ दिन पहले दिल्ली में एक घटना घटी। तीसरी मंजिल पर चल रहे एक कोचिंग संस्थान में आग लग गई। वहां पढ़ रहे सैकड़ों बच्चों को जान बचाने के लिए रस्सी के सहारे उतरना या कूदना पड़ा। बहुत से बच्चे घायल हो गए। बहुत दुखद घटना है। लेकिन इस घटना का इससे भी ज्यादा दुखद पहलू दूसरा है। बिल्डिंग के नीचे जहां बच्चे कूद रहे थे- वहां इकट्ठा सैकड़ों लोग अपने-अपने मोबाइल से कूदते हुए बच्चों की वीडियो बनाने में जुटे थे। न बच्चों के प्रति कोई संवेदना थी, न उनकी मदद करने की इच्छा। ऐसा लग रहा था कि संवेदन शून्य लोग कोई तमाशा देख रहे हों।

यह घटना बताती है कि हमारे शहर संवेदनशून्य तमाशबीनों की भीड़ में बदलते जा रहे हैं। दिल्ली हो, मुंबई हो, इंदौर हो या कोई भी अन्य शहर; सब जगह ऐसी ही संवेदनशून्यता पसरी नजर आती है। यही कारण है कि शहरों में अपराधियों के हौसले बुलंद होते जा रहे हैं। वे जानते हैं- जिसे चाहो लूट लो, कोई मदद को नहीं आएगा। हत्या, बलात्कार, लूट जैसे बड़े अपराधों की तो बात अलग है- चैन लूटने, पर्स छीनने, मारपीट करने, मोबाइल छीनने जैसी घटनाएं भी तेजी से बढ़ती जा रही हैं। अपराधी इतने बेखौफ हो गए हैं कि दिनदहाड़े बाइकों पर धड़धड़ाते हुए आते हैं और वारदात कर आराम से निकल जाते हैं। आस-पास के लोग बस तमाशा देखते रहते हैं।

ये लुटेरे पुलिस और जनता की निष्क्रियता का पूरा लाभ उठाते हैं। किसी के भी घर में घुसकर मारपीट करने में भी संकोच नहीं करते। वहां भी अड़ोसी-पड़ोसी तमाशबीन बन कर रह जाते हैं। जरूरत पड़ने पर गवाही तक देने से इनकार कर देते हैं। हां, सोशल मीडिया पर पुलिस से लेकर गृहमंत्री तक को कोसने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

यह सही है कि अपराधों का बढ़ता ग्राफ रोकने में पुलिस व्यवस्था काफी हद तक जिम्मेदार है। अपराधियों से मिलीभगत के मामले भी सामने आते हैं। रिपोर्ट दर्ज करने में ना-नुकर करना, शिकायतकर्ता को बेवजह परेशान करना, थाने के चक्कर लगवाना जैसे उदाहरण सामने आते रहते हैं। पर क्या केवल पुलिस को कोस कर हमारा कर्तव्य पूरा हो जाता है। सड़क पर या पड़ोस में अपराध होने पर भी तमाशबीन बने रहना किसी अपराध से कम नहीं है। कल ऐसी घटनाएं आप या आपके परिवार के साथ भी हो सकती हैं।

तथाकथित 'सभ्यता' ने आज हमारे सामाजिक रिश्तों और संवेदनाओं को निगल लिया है। केवल सरकार और पुलिस को कोसने की बजाय एक पल ठहर कर अपने भीतर झांके। रिश्ते बनाएं। संवेदनाएं जगाएं। किसी के साथ भी अपराध घटित होता है तो अपराधियों से एकजुट होकर निपटें। फिर देखिए, कैसे सारे अपराधी दुम दबाकर आपके शहर से भागते हैं। आपकी सक्रियता पुलिस को भी सुधार देगी।



पेड़

आंधी पानी और धूप की, मार रोज़ सहते हो ।
इतने पर भी पेड़ किस तरह हरे भरे रहते हो ।
संतो जैसा काम तुम्हारा, हरी भरी है काया ।
पास तुम्हारे जो आता है, उसको मिलती छाया ।
धरती का रस खींच-खींच, सबको बाँटा करते हो ।

दानवीर ! तुम धरती को, फल फूलों से भरते हो ।
तुमको पा कर चलता है , लाखों लोगों का धंधा ।
किन्तु स्वार्थी लोभी मानव, तुम्हे काटता अँधा ।
बनते हो पतवार जिंदगी की नौका खेते हो ।
मर जाने पर भी मरघट तक, साथ तुम्ही देते हो ।

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA हर्षुल (कक्षा -3)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा सुपुत्री श्री प्रवीण व लेखा परीक्षक
Dedicated to Truth in Public Interest

ईमानदार



अशोक कुमार महतो
लेखापरीक्षक

यह कहानी एक ऐसे बालक की है जिसका नाम मनोज था। मनोज अत्यंत निर्धन परिवार से था। जीवनयापन के लिए मनोज के परिवार के हर सदस्य को कड़ी मेहनत करनी पड़ती थी, मनोज के पिता एक साइकिल की दुकान में काम करते थे और रात्रि को चौकीदार का भी काम किया करते थे। घर चलाने के लिए मनोज की माँ को अस्वस्थ होने के बावजूद लोगों के घरों में बर्तन माँझने तथा झाड़ू पोछा का काम करना पड़ता था जिससे दो पैसे कमा सके और घर खर्च में सहयोग कर सके। मनोज के पिता का सपना था कि मनोज खूब पढ़ लिख कर एक कामयाब इंसान बने तथा गरीबी से अपने परिवार को मुक्ति दिलाये और अपने भाई बहनों की जिम्मेदारी उठा सके।

मनोज का परिवार बहुत बड़ा था फिर भी किसी तरह उनका गुजारा हो जाता था। मनोज के पिता मनोज को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाते थे। पैसों की कमी के कारण अन्य बच्चों को प्राइवेट स्कूल में पढ़ाना मुश्किल था मनोज के पिता की इच्छा तो बहुत थी लेकिन पैसों की कमी के कारण विवश थे। जैसे तैसे मनोज की पढ़ाई का खर्च जुटा पा रहे थे। मनोज पढ़ाई में हमेशा अव्वल आता था इसी लिए मनोज की पढ़ाई देख कर पिताजी का विश्वास बढ़ता था और हिम्मत मिलती थी, कि उनका पुत्र एक न एक दिन अव्वल आते हुए एक उच्च अधिकारी जरूर बनेगा।

आज सुबह से ही मनोज बहुत चिंतित था वह बार-बार अपने पिता जी को देखता तो कभी दीवार की घड़ी की ओर कारण आज उसकी विद्यालय की फीस भरनी थी जो तीन महीने से बाकी थी, जिस कारण वह कभी अपने पिता जी को देखता तो कभी दीवार घड़ी को। उसकी इस बेचैनी को देखते हुए, मनोज के पिता ने समय देखते हुए कहा आज तुम्हें स्कूल जाने में देरी नहीं हो रही है। मनोज ने कहा पिता जी आज स्कूल में फीस भरनी है। मनोज के पिताजी ने कहा मालिक से पैसे मांगे हैं उन्होंने कल देने का वादा किया है मनोज यह बात सुनकर बड़ा उदास हुआ चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता था। वह घर की हालत को जानता था। पैसों की कितनी दिक्कत चल रही है। माँ बीमार होते हुए भी लोगों के घरों में काम करती है। माँ की दवाइयों का खर्चा मनोज यह सोचते हुए माता-पिता का आशीर्वाद लेकर स्कूल को चल दिया। वह स्कूल जाते हुए अपने परिवार के हालात के बारे में सोच रहा था कि उसका परिवार इतना गरीब क्यों है काश उसके माता-पिता भी अमीर होते तो मेरे भाई-बहन भी अच्छा स्कूल से शिक्षा ग्रहण करते माता जी को दूसरों के घरों में काम नहीं करना पड़ता यही सोचते हुए मनोज ने कसम खाई की वह कड़ी मेहनत एवं ईमानदारी से एक दिन एक बहुत बड़ा अफसर बनेगा अपने परिवार की सभी जरूरतों को पूरा करेगा मन ही मन में यह भी डर सता रहा था कि वह अध्यापक के पूछने पर क्या जवाब देगा क्योंकि कल उसे अध्यापक ने फीस के बारे में पूछा था तथा फीस भरने का आखिरी मौका दिया था इसलिये मनोज डर रहा था कि कहीं उसका नाम ना काट दिया जाए। मनोज आज पूरी तरह से टूटा हुआ था। मनोज अपने घर की हालत से पूरी तरह वाकिफ था रोते-रोते अपने आँसुओं को पोंछता हुआ वह स्कूल की तरफ जा रहा था। थोड़ी दूर चलने के पश्चात एक मोड़ आया या यूँ कहो की उसकी जिंदगी में एक नया मोड़ आयाअब वो मोड़ क्या है? मनोज की जिंदगी क्या सच में बदल जाएगी? आपके मन में चल रहे प्रत्येक प्रश्न का उत्तर आपको जल्दी मिलेगा कहानी के दूसरे भाग में.....



मीना कुमारी
डाटा एंट्री ऑपरेटर

“आज के हालात”

आज के इंसान को ये क्या होता जाए,
ऐसे लगता है कि जैसे
इंसान तो इंसान का ही दुश्मन होता जाए,
अब तो खून-खून न होकर पानी होता जाए,
ऊपर से खुदा भी देखकर हैरान होता जाए,
इंसानियत तो मिटती ही चली जाए,
शर्म-लिहाज भी न जाने कहाँ फ़ना होती जाए,
बढ़ती जा रही है चोरी, लूटपाट और हत्याएं,
अब तो आम हो रही हैं रेप की घटनाएं,
महंगाई तो बढ़ती ही चली जाए,
इस पर कोई लगाम ही न कस पाए,
रिश्ते-नाते भी अब तो हो गए हैं पराए,
दूसरे की खुशी से सब जल जाएं,
सच्चाई पर झूठ का पर्दा ही लहराए,
इसी के सहारे ये दुनिया चलती जाए,
अपने-अपने मोबाइल में ही हर कोई खो जाए,
जिसका कोई भी हल नज़र न आए,
और तो और झूठ कहूँ तो लफ्जों का दम घुट जाए,
और सच कहूँ तो इंसान खफ़ा हो जाए !!



सुमित कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

ई- ऑफिस

“कार्यालयों की आवश्यकता और इसके कार्यान्वयन में चुनौतियाँ



आधुनिक युग संचार क्रांति का युग है तथा इसके फलस्वरूप धीरे-धीरे परंपरागत सरकारी कार्यालयों का स्वरूप बदलता जा रहा है। आजकल कार्यालयों में ई-ऑफिस का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। ई-ऑफिस से तात्पर्य ऐसी कार्यालयी व्यवस्था से है जिसमें अधिक से अधिक कार्य इलेक्ट्रॉनिक रूप में किया जाये और कागजों या फाइल्स का प्रयोग न्यूनतम हो। आधुनिक युग में ई-ऑफिस एक महती आवश्यकता है। ई-ऑफिस के महत्व को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है :

कामकाज की ऑनलाइन मॉनिटरिंग (निगरानी)– ई-ऑफिस का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि इससे काम की ऑनलाइन ट्रेकिंग सुगमता से की जा सकती है। कोई कार्य किस अवस्था में किस अधिकारी या कर्मचारी के पास लंबित है तथा उसकी स्थिति क्या है, इसका बगैर विलंब के सुगमता से पता लगाया जा सकता है। किसी भी पुरानी सूचना या डाटा को आसानी से खोजा जा सकता है जिससे समय की बचत होती है।

स्टेशनरी की बचत: ई-ऑफिस का महत्वपूर्ण लाभ यह भी है कि इससे सरकारी कागजों व स्टेशनरी की बचत होती है। यदि अधिक से अधिक कार्य ऑनलाइन व्यवस्था से किया जायेगा तो स्टेशनरी के प्रयोग की कम आवश्यकता पड़ेगी और सरकारी खर्च में भी में कमी आएगी। इस पैसे को अन्य सरकारी योजनाओं और कार्यों में व्यय किया जा सकेगा। इसके दूरगामी परिणाम यह है कि इससे वृक्षों के कटाव में भी कमी आएगी तथा पर्यावरण संतुलन में भी मदद मिलेगी।

कामकाज के निपटान में देरी में कमी: ई-ऑफिस का सबसे महत्वपूर्ण तथा दूरगामी लाभ यह भी है कि इससे लंबित पत्रों के निपटान में देरी में कमी आएगी। भौतिक रूप से पत्रों तथा फाइल्स के निपटान में जो देरी होती थी इससे त्वरित रूप से कमी आएगी।

कार्यशीलता और अनुशासन में वृद्धि : जब ई-ऑफिस द्वारा कर्मचारियों और अधिकारियों द्वारा बगैर विलंब के समयबद्ध तरीके से कार्य का संपादन किया जाएगा तो कर्मचारियों और अधिकारियों में कार्यशीलता और जवाबदेही की भावना स्वतः ही विकसित होगी। इससे धीरे-धीरे कार्यालय में एक स्वस्थ अनुशासन के वातावरण के निर्माण का मार्ग प्रशस्त होगा।

घर से कार्य करने की सुगमता: ई-ऑफिस का लाभ यह भी है कि इसके द्वारा घर से भी कार्य संपन्न किया जा सकता है। अगर कोई अधिकारी या कर्मचारी छुट्टी पर हो और किसी जानकारी या सूचना की उसके द्वारा मुहैया करने की जरूरत आन पड़े तो वह आसानी से ई- ऑफिस के द्वारा उपलब्ध करा सकता है। कोविड जैसी आपात स्थिति में ई-ऑफिस लाभकारी साबित हुआ है।

उपरोक्त बिन्दुओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि ई-ऑफिस आधुनिक युग में कितना अपरिहार्य है। ई-ऑफिस के सफल क्रियान्वयन में कुछ बुनियादी चुनौतियाँ हैं जिनसे पार पाना आवश्यक है। इन चुनौतियों का क्रमवार वर्णन निम्न है-

आधारभूत ढांचे का अभाव :- ऑफिस के सफल क्रियान्वयन में एक विकट समस्या यह है की अभी भी कई कार्यालय में कर्मचारियों के अनुपात में पर्याप्त आधारभूत संरचना का अभाव है तथा कई कार्यालय में कई बार तो एक ही सिस्टम पर दो या तीन में कर्मचारियों को कार्य करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में ई-ऑफिस में कार्य करना मुश्किल कार्य हो सकता है।

प्रशिक्षण तथा कौशल का अभाव :- कार्यालय में अभी भी कुछ कर्मचारियों तथा अधिकारियों के पास ई-ऑफिस जैसे प्लेटफार्म पर कार्य करने का पर्याप्त कौशल नहीं है वे प्रशिक्षण प्राप्त करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते हैं उन्हें बार-बार प्रशिक्षण दिलाने के बाद भी उनमें कौशल का सृजन करना सहज नहीं हो पाता है। वे फाइलों और पत्रों के पुराने ढर्रे पर ही कार्य करते रहना चाहते हैं।

इच्छाशक्ति का अभाव :- ई-ऑफिस के सफल कार्यान्वयन में कर्मचारियों द्वारा इसके उपयोग के लिए वांछित इच्छाशक्ति का अभाव है उन्हें पुराने ढर्रे से चली आ रही भौतिक रूप से पत्र व फाइल की व्यवस्था पर काम करना सुगम प्रतीत होता। ई-ऑफिस की व्यवस्था को अपनाने में उनका व्यापक दृष्टिकोण नहीं है।

इन्टरनेट की व्यापक पहुँच की समस्या :- ई – ऑफिस द्वारा काम करने में इन्टरनेट की पर्याप्त कनेक्टिविटी का न होना भी एक मुख्य कारण आज भी सुदूर क्षेत्रों में स्थित सरकारी कार्यालय में इन्टरनेट की सुगम कनेक्टिविटी उपलब्ध नहीं हो पा रही है। ई-ऑफिस पर कार्य करने के लिए इन्टरनेट की पर्याप्त कनेक्टिविटी का होना आवश्यक है। ऐसे कार्यालयों में ई-ऑफिस को साकार रूप देना कठिन है।

सहकर्मियों में प्रोत्साहन का अभाव :- अक्सर कार्यालय में ये भी देखने में आता है कि ई – ऑफिस में कार्य करने के लिए सहकर्मियों को प्रोत्साहित नहीं किया जाता है। उन्हें ऐसी स्थिति में पुराने तौर तरीकों से कार्य करने के लिए विवश होना पड़ता है ,यदि हम अपने कार्यालय परिवेश में अन्य कर्मचारियों को भी ई – ऑफिस में कार्य करने के लिए सहयोग और प्रोत्साहित करें तो वे भी धीरे-धीरे ई – ऑफिस में कार्य करने में सहजता महसूस करेंगे।

उपरोक्त बिन्दुओं के सन्दर्भ में इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता है कि ई- ऑफिस के सफल संचालन तथा कार्यान्वयन में कुछ आधारभूत चुनौतियां अवश्य है लेकिन ई – ऑफिस आज के समय में अभीष्ट आवश्यकता है, ई- ऑफिस के बिना भविष्य में कार्यालय में कार्य करने की परिकल्पना नहीं की जा सकती यदि आधुनिक आईटी युग के साथ कदम मिलाकर के चलना है तो हमें ई – ऑफिस की कार्यशैली को आत्मसात करना होगा।

Dedicated to Truth in Public Interest



हरी नारायण दीक्षित
डटा एंट्री ऑपरेटर

वक्त

वक्त के साथ सब कुछ बदल जाएगा आज जो भी चढ़ा, कल वो ढल जाएगा।
जिंदगी को थोड़ा सा समझ कर जियो छोड़ दो बस ये कहना कि चल जाएगा।।
जिसका बचपन रहा थोड़ा मुश्किल भरा वो सभी मुश्किलों से निकल जाएगा।
दंभ हाथी के जैसा कभी मत रखो वक्त, मच्छर के माफिक मसल जाएगा।।
दोस्ती में खलिश है जरा भी अगर वो तुम्हारी तरक्की से जल जाएगा।
इन सियासी बुतों से भला क्या कहें पानी चिकने घड़ों से फिसल जाएगा।
आजकल की सियासत है कुछ इस तरह खत्म कर दो, नहीं तो सँभल जाएगा।
काफिला तख्त मद में चला आ रहा ये रुकेगा नहीं बस कुचल जाएगा।
वक्त आने ही वाला है वो भी अभी आदमी-आदमी को निगल जाएगा।।

दोस्ती



मीना कुमारी
डाटा एंट्री ऑपरेटर

दोस्ती होती है बहुत ही अनमोल ।
इसका नहीं होता है कोई मोल ॥
दोस्ती तो है खुदा ।
इक-दूजे से नहीं होता है कोई जुदा ॥
दोस्ती तो है इक दर्पण ।
जिसमें सब कुछ रहता है अर्पण ॥
दोस्ती में होता है सब कुछ कुर्बान ।
इसके लिए चाहे निकल जाए प्राण ॥
दोस्ती तो महफिल की होती है शान ।
दो दिलों की होती है जान ॥
दोस्ती के विचार होते हैं जब एक समान ।
जीवन की राह हो जाती है तब आसान !!

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मेरी मम्मी



मीना कुमारी

डाटा एंट्री ऑपरेटर

ओ मेरी अच्छी मम्मी,
प्यारी-प्यारी मम्मी,
सारे जग से न्यारी मम्मी,
अब तू ही बता,
कहाँ तुम चली गई ?
दीवार में तेरी तस्वीर देती है दिखाई,
अंगना में वीरानी सी है छाई,
तेरी सुहानी यादें हर पल है आई,
तेरी कमी ने मेरी नींदें हैं चुराई,
जीवन की कली है मुरझाई,
अंखियों में आंसुओं की लहर है समाई,
किसकी थामूं अब मैं कलाई,
तेरी ये लम्बी जुदाई,
अब तो बन गई है दुखदाई,
तेरी नहीं रही मुझ पर परछाई,
तुम्हें न भूलने की कसम है मैंने खाई,
ओ मेरी प्यारी मम्मी कहाँ तुम चली गई ?



बबीता

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रोचक तथ्य



- 1 दुनिया का सबसे बड़ा परिवार भारत में रहता है। गिनीज बुक में दर्ज 162 मेंबर वाली इस फैमिली को कुछ लोग महापरिवार भी कहते हैं।
- 2 भारत में कुल जनसंख्या के 38 प्रतिशत लोग शाकाहारी हैं। इतनी बड़ी संख्या की वजह से शाकाहारी लोगों की सूची में भारत सबसे ऊपर है।
- 3 अमेरिका के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा अंग्रेजी बोलने वाला देश है।
- 4 महाराष्ट्र के शनि शिंगणापुर गाँव के बारे में यह तथ्य प्रसिद्ध है कि किसी भी घर में दरवाजे नहीं हैं। यहाँ की खास बात यह है कि दरवाजे न होने के बावजूद भी चोरी की एक भी घटना नहीं होती है।
- 5 एक सर्वे में स्पष्ट हुआ है कि भारतीय महिलाओं के पास पूरी दुनिया का तकरीबन 11% सोना है जो किसी और देश की महिलाओं के पास नहीं है।
- 6 भारत में एक तैरता हुआ डाकघर है जो कि श्रीनगर के डल झील में स्थित है।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest





मीना कुमारी
डेटा एंट्री ऑपरेटर

रक्षाबंधन

युगों-युगों से चलता आ रहा है राखी का त्यौहार,
साल में आता है एक बार,
मिठाईयों और उपहारों से सज जाता है बाज़ार,
जिसका रहता है भाई-बहन को इंतजार,
रेशम की डोरी भाई की रक्षा करती है हर बार,
भाई भी देता है प्यारी बहना को उपहार,
लम्बी उम्र की कामना करती बहना हर बार,
भाई-बहन को खुशियाँ मिलें बेशुमार,
प्रभु की कृपा से कभी न हो आपस में तकरार,
सदा ही अमर रहे भाई-बहन का प्यार,
ऐसे ही मनाते रहें राखी का त्यौहार !!

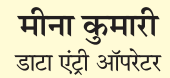
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रेष्ठ विचार



मीना कुमारी
डाटा एंट्री ऑपरेटर

दूसरों को बदलना चाहते हो । तो सबसे पहले स्वयं को बदलो ॥
शब्दों का प्रयोग सोच-समझ कर करें,
शब्दों से ही हम इंसान को
अपना शत्रु या मित्र बना देते हैं ॥
आलस्य को अपने जीवन में कदापि न आने दें,
आलसी व्यक्ति को आसान कार्य भी कठिन लगता है,
आलस्य जीवन की प्रगति में बाधक है ॥
झूठ पर आधारित संबंध रेत के भवन के समान होते हैं ।
जो सच पता चलने पर इक न इक दिन टूट जाते हैं ॥
भगवान् का नाम लेने से यदि आपकी आँखों में आंसू आते हैं ।
तो समझे की आप भगवान के समीप हैं ।
अपने जीवन में कुछ ऐसे भी कर्म कीजिये
जो निस्वार्थ भाव से हों !!
मुस्कुराने से चेहरे का नूर बना रहता है।
इसलिए सदैव मुस्कुराते रहिए ॥
आप अपने स्वयं की पहचान बनाइए ।
जिससे लोग आपसे प्रेरित हो सकें ॥
परमात्मा को अपना बना लें साथी ।
परमात्मा बन जाएंगे तेरे सारथी ॥
भविष्य की चिंता करना ।
वर्तमान को खराब है करना ॥
खुशी से कार्य करोगे ।
तो सफलता अवश्य मिलेगी ॥
यदि आप किसी को खुशी नहीं दे सकते हो ।
तो उसे कभी दुःख भी मत दो ॥
यदि आप किसी को खुशी देते हो ।
तो आपको खुशियाँ बेशुमार मिलेंगी ॥
प्रतिदिन कर नेक काम ।
न जाने कौन सा कर्म हो जाए तुम पर मेहरबान ॥

[illegible]



हरी नारायण दीक्षित
डेटा एंट्री ऑपरेटर

मेरी आह

गम से खाली नहीं जिस्म का कोई भी कोना,
हम रहें न रहें पर कोई भी मत रोना,
तुम जितने भी कर लो जादू टोना,
मुझ पर कोई भी असर नहीं होना,
मेरी आहों से तुम डर कर रहना,
इक दिन तुम्हें भी पड़ेगा सब कुछ सहना,
मेरी आहों ने तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ना,
तुम्हारे कर्मों का हिसाब जरूर है होना !!

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Interest





हरी नारायण दीक्षित
डटा एंट्री ऑपरेटर

रोजगार की चाहत

खाली कंधों पर थोड़ा सा भार चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब रोजगार चाहिए
जेब में पैसे नहीं हैं डिग्री लिए फिरता हूँ
दिनोदिन अपनी नजरों में गिरता हूँ
कामयाबी के घर में खुले किवाड़ चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब मुझे रोजगार चाहिए
टैलेंट की कमी नहीं है भारत की सड़कों पर
दुनिया बदल देंगे भरोसा करो इन लड़कों पर
लिखते-लिखते मेरी कलम तक घिस गई
नौकरी की प्रक्रिया में अब सुधार चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब मुझे रोजगार चाहिए
दिन-रात करके मेहनत बहुत करता हूँ
सूखी रोटी खाकर ही चैन से पेट भरता हूँ
भ्रष्टाचार से लोग खूब नौकरी पा रहे हैं
रिश्वत की कमाई खूब मजे से खा रहे हैं।
नौकरी पाने के लिए यहाँ जुगाड़ चाहिए
बेरोजगार हूँ साहब मुझे रोजगार चाहिए
“युवा के अंतरात्मा की आवाज”





चांदनी कुमारी

स्टेनोग्राफर

असफलता विरासत है



सुनहरे पल भी बीतेंगे , सुखमयी दिन भी आएंगे
तेरे जुनून के आगे , सारी बाधाएं थर्रायेंगी।
बस तू चलता चल , किनारा भी मिलेगा ,
नदियाँ भी रुकेंगी , चट्टानें भी हिलेंगी ।
मंजिलें मौजूद होती हैं, कोशिशें जहाँ हैं ।
असफलता जिसने देखी , वही सफल यहाँ है।
मिसाल बन तू , अपने जुनून का
भूल जा अपने आलस्य को, हत्या कर दे सुकून का
तेरी परवान ऐसी हो , पूरा जहाँ तुमको देखे,
हौसले इतने बुलंद हों, वक्त भी घुटने टेके।
कदम चूमेंगे सपने, अब भागना कहा है ।
असफलता जिसने देखी , वही सफल यहाँ है ।
मेहनत शब्द का तू ऐसा पर्याय बन जा ,
स्वप्न पूरे करने का ऐसा उपाय बन जा ।
लगन हो अमृत, आलस्य विष का प्याला हो ,
अँधेरे को तो रौंदना ही है , चाहे कितना भी काला हो।
काली घटा को चीर के , अब तू खड़ा वहाँ है।
असफलता जिसने देखी, वही सफल यहाँ है।



बेटियाँ और हमारा समाज



चांदनी कुमारी
स्टेनोग्राफर

छोटी सी दुनिया है जिसकी , नाजुक परिवेश में जो पली ,
चहकती आवाजों के सहारे , लड़खड़ाते कदमों से चली ।
छोड़ती अपनी नादानियाँ , पापा के साथ की शैतानियाँ ,
कुछ अपनी मनमानियाँ , कुछ बनावटी कहानियाँ ,
सपनों के डोर तो तब टूटे , जब बचपन उसकी टली।
देखते - देखते पापा की लाड़ो, पता नहीं कब बड़ी हो चली॥
कुछ अलफाजों में उसे शायद , काफी कुछ कहना होगा ,
पता नहीं माँ की अंचल में , शायद उसे रहना होगा।
बाहर की दुनिया देख - देख , उसमें डर आने लगा ,
उस छोटी सी गुड़िया पर कैसे न जाने काल मंडराने लगा।
दुबककर जीना और सब सहते जाना , उसे समझ आने लगा ,
तुम लड़की हो कह - कहकर पूरा समाज चिढ़ाने लगा॥
हालात बदल जरूर गए , पर उसकी दशा वही है।
रास्ते चलते छींटाकशी , कोई नई बात नहीं है।
माँ - बहनों के रिश्तों की , मानों धजियाँ जैसे उड़ गई।
रातों से तो डरती ही थी , अब दिन से भी मुड़ गई ,
नींद में भी इस दुनिया की , गंदी छवि आती है ,
मैं लड़की हूँ , संभल कर चलूँ , हर वक्त मुझे चिढ़ाती है॥
पिंजरों में नहीं मैं, खुले गगन में उड़ना चाहती हूँ।
उन लड़कों की तरह मैं भी , उन्हें घूरना चाहती हूँ।
दिखाना चाहती हूँ उन्हें भी , अपने अस्तित्व को ,
आहिस्ता - आहिस्ता ही सही , अपने दायित्व को ,
ताकि सपनों की डोर छुड़ जाए , उसके बचपन टलने से।
जवानी रंगीन हो जाए , सूरज के और ढलने से॥
ना कोई डर हो इस भूतल में विचरने का ,
कुछ मौका मिल जाए , हमें निखरने का।
न दुबककर जाऊँ , अरमानों के बोझ तले ,
खुल के हमें भी सपने , साकार करने का मौका मिले।
इस संकीर्ण समाज में , मेरा कुछ नहीं होना है।
सीता द्रौपदी की तरह , हमें अब नहीं खोना है॥



शम्भू



अशोक कुमार महतो
लेखापरीक्षक

आगड़ बम, बागड़
बम, बाजे रे बाजे रे, बाजे डमरू,
डम डम डमरू २
आज तो नाचे रे नाचें रे,
नाचें प्यारे शम्भू-२ ।
नाचें नारद, नाचें कृष्णा,
नाचें ब्रह्मा और
नाचे रे नाचें रे संग विष्णु ।
हो आगड़ बम, बागड़ बम.....
नाचें राधा, नाचें लक्ष्मी और
नाचे रे नाचें रे संग गौरा ।
हो आगड़ बम, बागड़ बम.....
हो नाचें नंदी, नाचें भालू और
'नाचे रे नाचें रे संग मयूर ।
हो आगड़ बम, बागड़ बम.....
धरती नाचें, अम्बर नाचें,
हो नाचे रे नाचें रे संग पवन ।
हो आगड़ बम, बागड़ बम.....
मैं भी नाचू, हर कोई नाचें,
बाँध के घुंघरू - २
हो आगड़ बम, बागड़ बम,
बाजे रे बाजे रे, बाजे डमरू,
डम डम डमरू २
आज तो नाचे रे नाचें रे,
नाचें प्यारे शम्भू-२ !!

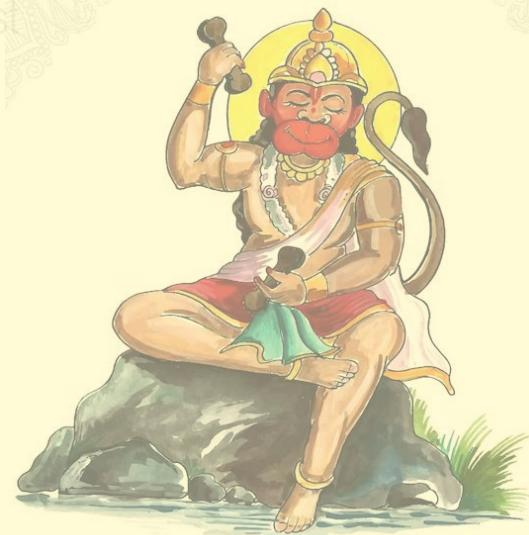


श्री रामचंद्र



अशोक कुमार महतो
लेखापरीक्षक

आज धरती उतार रही है आरती,
फूल बरसा रहा है आसमान,
घर-घर हो रहा है मंगल गान,
सबके चेहरों पर है प्यारी मुस्कान,
की आज आयेंगे श्री रामचंद्र भगवान्,
संग में होंगे सबके प्यारे हनुमान,
करने सबका कल्याण,
जय श्री राम, जय हनुमान ।
कहीं बाजें ढोल, कहीं बाजें नगाड़े,
बहुत खूबसूरत हैं सभी नजारे,
बनकर मेहमान,
जय श्री राम, जय हनुमान ।
नील गगन सा है रंग प्रभु का,
मुखड़ा है चंद्र समान
हाथों में है धनुष-बाण,
तीन लोक के हैं स्वामी,
हर प्राणी के है प्राण
आओ हम मिलकर सियाराम को करें प्रणाम,
जय सिया राम जय हनुमान
कही बाजे ढोल, कही बाजे नगाड़े ,
बहुत खूबसूरत है सभी नजारे,
झूम-झूम कर नाचें लोग सारे,
राम नाम के हो रहे हैं, चारो ओर जयकारे
सभी प्रभु जी को ही पुकारें,
व्याकुल बड़े हैं, कब से खड़े हैं,
दर्शन के प्यासे सब
सब कर रहे है इंतजार
जय श्री राम, जय हनुमान !!



गाँव



अजय चौहान
एम.टी.एस

पगडंडी पर छाँवों जैसा कुछ भी नहीं दिखा,
गाँवों में अब गाँवों जैसा कुछ भी नहीं दिखा।
कथनी सबकी कड़वी-कड़वी, करनी टेढ़ी-टेढ़ी,
बरकत और दुआओं जैसा कुछ भी नहीं दिखा।
बिछुआ, पैरी, लाल महावर, रुनझुन करती पायल,
गोरे-गोरे पाँवों जैसा कुछ भी नहीं दिखा।
राधा, मुनिया, धनिया, सीता जींस पहनती है,
उनमें शोख अदाओं जैसा कुछ भी नहीं दिखा।
बरगद, इमली, महुआ, पीपल, शीशम लुप्त हुए,
शीतल मंद हवाओं जैसा कुछ भी नहीं दिखा।
पंचायत में राजनीति की गहरी पैठ हुई,
तब से ग्राम-सभाओं जैसा कुछ भी नहीं दिखा।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

आधुनिक भारत में विपक्ष “साधक या बाधक”



सुमित कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

लोकतंत्र व्यवस्था में विपक्ष की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सत्ताधारी पक्ष सत्ता के मद में चूर होकर अपनी मनमानी न कर सके तथा अहितकर व अलोकतांत्रिक नीतियों को जनता पर ना थोप सके, विपक्ष पर इसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है। एक सफल लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि विपक्ष निष्पक्ष होकर अपनी भूमिका निभाए जिससे कि आम जनता जिन्होंने अपने मत का प्रयोग कर सत्तापक्ष को आसीन किया है, उनके लिए सत्तापक्ष द्वारा लोकतांत्रिक तथा कल्याणकारी फैसले लिए जा सकें।

हमारे राष्ट्र ने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात अभूतपूर्व प्रगति की है तथा आज वह विश्व की पांच अर्थव्यवस्थाओं में काबिज है। स्वतंत्रता प्राप्ति से अब तक 75 वर्षों में इसके संचालन में सत्ता पक्ष के योगदान के साथ- साथ विपक्ष की भूमिका का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। केन्द्र सरकार के साथ- साथ राज्य सरकारों ने भी इन 75 वर्षों में विपक्ष ने अपना दायित्व बखूबी निभाया है। विपक्ष की लोकतंत्र में महती भूमिका को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है :-

1. सत्तापक्ष की मनमानी पर रोक:- विपक्ष द्वारा यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि सत्तापक्ष द्वारा बनाई गई नीतियाँ तथा कानून राष्ट्र व इसके नागरिकों के हितों में हो तथा वह पक्ष सत्ता के अहंकार में चूर होकर अलोकतांत्रिक तथा अहितकारी नीतियाँ आम जनता पर ना थोप दे। अगर सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा कोई कानून तथा फैसला अलोकतांत्रिक है तो विपक्ष का यह दायित्व बन जाता है कि वह लोकतांत्रिक तरीके से इसका विरोध कर सत्तापक्ष की मनमानी पर रोक लगाए और इस पर उचित उपचारात्मक कार्यवाही करें।

2. परामर्शदाता के रूप में भूमिका:- एक कुशल विपक्ष का यह भी दायित्व बनता है कि वह सत्तापक्ष के लिए परामर्शदाता का कार्य भी करें। भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का कथन इस संदर्भ में प्रासंगिक हो जाता है कि सफल लोकतंत्र के संचालन के लिए सत्ताधारी पक्ष के साथ- साथ विपक्ष को भी अपनी भूमिका सहायक के रूप में निभानी चाहिए जिससे कि सरकार द्वारा कल्याणकारी कार्यक्रम तथा योजनाओं को सफल तरीके से क्रियान्वित किया जा सके। विपक्ष सत्तापक्ष को यह भी सही समय पर बताए की सरकार के द्वारा चलाई जा रही किसी योजना या कार्यक्रम में क्या कोई खामी है तथा उसको ठीक करने के लिए सत्तापक्ष द्वारा क्या- क्या उपाय किए जा सकते हैं, तभी एक सफल विपक्ष की भूमिका का निर्वहन हो सकेगा। हमेशा एक आलोचक के रूप में अपने आपको प्रतिबिंबित करके विपक्ष एक सफल लोकतांत्रिक व्यवस्था के निर्माण में भागीदार नहीं हो सकता है।

3. राष्ट्रहित के मुद्दों को संसद पटल पर लाना = विपक्ष का यह भी दायित्व बनता है कि वह ऐसे मुद्दों को संसद सत्र में सत्तापक्ष के सामने लाए जो आम जन जीवन व राष्ट्र के विकास से जुड़े हों ताकि सत्तापक्ष उन पर विचार विमर्श कर अमली जामा पहना सके। ऐसे मुद्दे विपक्ष द्वारा समय- समय पर सामने लाये जाने चाहिए ताकि देश के विकास तथा आम जनता के हितों की अनदेखी न हो सके।

लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यह चलन हो गया है कि सत्तापक्ष की नीतियों की आलोचना करना व उनका उपहास करना ही विपक्ष का एकमात्र दायित्व हो गया है। सत्तापक्ष के हर फैसले का विरोध करने के लिए विपक्ष एकदम आतुर दिखाई देता है। अपने अहंकार व स्वार्थ के कारण विपक्ष अपनी लोकतांत्रिक भूमिका को जल समाधि देकर सत्तापक्ष हर नीति व कार्यक्रम की भर्त्सना कर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास करता प्रतीत होता है। समय - समय पर विपक्ष द्वारा ऐसे वक्तव्य सामने आते रहते हैं जिनसे समूचे राष्ट्र की भावनाएं आहत होती हैं। विपक्ष की भूमिका लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक संयोजक की होनी चाहिए ना कि विघटनकारी जिससे राष्ट्र एकता व अखंडता को नुकसान पहुंचे। सरकार की नीतियों की आलोचना में विपक्ष को परामर्शदाता व कल्याणकारी योजक का कार्य तन्मयता से निभाना चाहिए।



सुमित कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

हमारा प्यारा तिरंगा झंडा



यह तिरंगा झंडा हमें प्राणों से भी प्यारा है
यह हमारे राष्ट्र का गौरव व अमिट पहचान है
इसकी आन बान के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान है
यह तिरंगा झंडा हमें प्राणों से भी प्यारा है ।
इसके गौरव व मान पर कोई आँच न आए
हमारे सैकड़ों वीर जवानों ने इसके लिए अपना शीश कटवाया है
विकट विषम परिस्थितियों में अदम्य धैर्य व साहस के बल पर
वीर साहसी सैनिकों ने इसकी रक्षा कर इसका गौरव बढ़ाया है
यह तिरंगा झंडा हमें प्राणों से भी प्यारा है ।
इसका केसरिया रंग हमें साहस व शौर्य सिखलाता
मध्य में सफेद रंग हमें शांति व सत्य का पाठ पढ़ाता
इसका हरा रंग हमें समृद्धि व खुशहाली का मार्ग दिखलाता
नीला चक्र हमें जीवन में निरंतर प्रगतिशील होने की प्रेरणा देता
यह तिरंगा झंडा हमें प्राणों से भी प्यारा है।
आओ, आजादी के इस अमृत महोत्सव पर हम यह प्रण करें
इसकी आन व गरिमा पर कोई आंच न आने देंगे
अपने जीवन में सत्य और निष्ठा से अपना कर्तव्य पालन कर
इसके मान को हम जन नित-2 आगे बढ़ाएंगे,
यह तिरंगा झंडा हमें प्राणों से भी प्यारा है ।



प्रीती चौधरी
लेखापरीक्षक

एक पल



शायद उस दिन वो एक पल उस पर भारी पड़ गया, एक पल में बहुत ताकत होती है। आपसे और मुझसे बहुत ज्यादा। उस एक पल में हिम्मत जवाब दे जाती है, वो आपको खड़ा भी कर सकता है, तो वो आपको सबसे परे भी ले जा सकता है। उस एक पल की कोई तैयारी नहीं होती और ना ही कोई चेतावनी। हां कुछ इशारे जरूर होते हैं, पर उन्हें समझने के लिए किसी और का होना बहुत जरूरी है। अगर तुम कभी अकेले हो और ऐसे किसी पल से तुम्हारी मुलाकात हो तो तुम तुरंत मुड़ जाना और किसी अपने के पास चले जाना, या किसी अपने को अपने पास बुला लेना, मदद मांगने में पल भर भी मत लगाना, अपनी बात बताना, अगर हो सके तो जी भर रो लेना, सब कुछ कर लेना, बस तुम चले मत जाना। तुम चले मत जाना।

उस पल के कुछ पहलुओं से मेरी मुलाकात हुई है और मैंने जाना है कि उस पल को कई तरीकों से रोका जा सकता है। पर उसके लिए एक समाज लगता है 'एक पूरा समाज'। एक ऐसा समाज जिसमें समझ हो, सब्र हो सुनने की, जानने की, एक ऐसा समाज जो हमारी पहुँच में हो। ऐसा समाज जो डराए नहीं 'अपनाये', जो हालातों से लड़ते हुए इंसान को हारा हुआ नहीं बताये। बल्कि उसकी हिम्मत बढ़ाये। बड़ी हिम्मत लगती है, अकेले उस पल का सामना करने में।

तो जाहिर सी बात है, हिम्मत टूट भी सकती है। इसलिए तुम अपना अनुमान मत लगाना, उस जाने वाले की हक्रीकत में अपनी कल्पना मत मिलाना।

‘हाँ, हो सके तो खुद को इस क्राबिल बनाना,

‘कि समझ पाओ वे इशारे जो झाँकते रहते हैं, कि सुन पाओ वे बातें जो अकसर छुपाई जाती हैं, कि देख पाओ वे पहलू जो धुंधले से हैं, कि जान पाओ वे इरादे जो जज्बाती से हैं, कि पूरा कर पाओ वे ख्वाब जो बगावती से हैं, कि कर पाओ कुछ उस एक पल के भारी पड़ने से पहले उस एक पल के भारी पड़ने से पहले’”।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

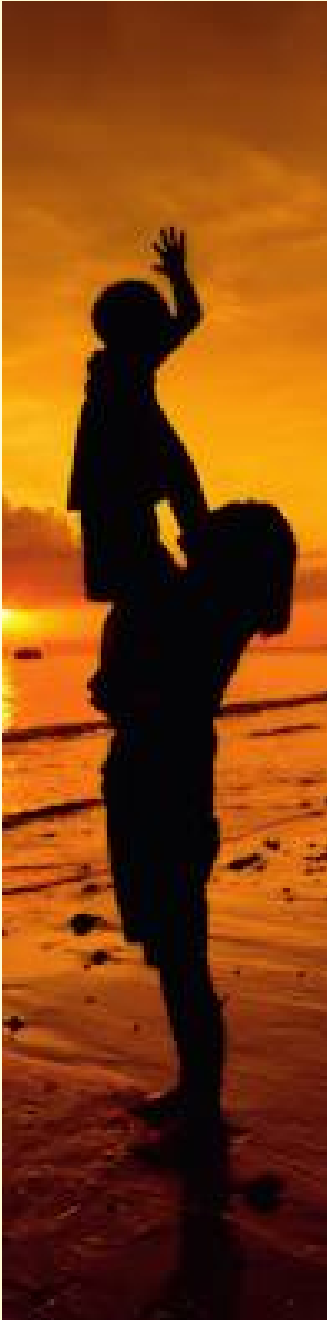
Dedicated to Truth in Public Interest



धीरेन्द्र कुमार

सहायक पर्यवेक्षक

माँ



कल रात एक ऐसा वाक्या हुआ जिसने मेरी जिंदगी के कई पहलुओं को छू लिया। रात के करीब 7 बजे होंगे, मोबाइल बजा। उठाया तो उधर से रोने की आवाज आई, मैंने शांत कराया और पूछा की भाभी जी आखिर क्या हुआ? उधर से आवाज आई “आप कहा है”? और कितनी देर में आ सकते है, मैंने कहा “आप परेशानी बताइए” और भाई साहब कहाँ है? माता जी किधर है, लेकिन ऊपर से केवल एक ही रट की “आप आ जाइये” मैंने कहा की मैं आता हूँ कम से कम एक घंटा पहुंचने में लगेगा। जैसे तैसे पूरी घबराहट में पहुंचा, देखा तो भाई साहब, हमारे मित्र जो की जज है, सामने बैठे हुए है, भाभी जी रोना चीखना कर रही है, 12 साल का बेटा भी परेशान है। 9 साल की बेटा भी कुछ नहीं कह पा रही है। मैंने भाई साहब से पूछा की आखिर क्या बात है? भाई साहब कोई जवाब नहीं दे रहे थे। फिर भाभी जी ने कहा “ये देखिये तलाक के पेपर ये कोर्ट से टाइप करा के लाये है, मुझे तलाक देना चाहते है” मैंने पूछा - ये कैसे हो सकता है? इतना अच्छा परिवार है 2 बच्चे हैं। प्रथम दृष्टि में मुझे लगा ये मजाक है, लेकिन मैंने बच्चों से पूछा दादी किधर है। बच्चों ने बताया पापा जी ने उन्हें 3 दिन पहले नोएडा के वृधाश्रम में शिफ्ट कर दिया है। मैंने घर के नौकर से कहा, मुझे और भाई साहब को चाय पिलाओ, कुछ देर में चाय आई, भाई साहब को बहुत कोशिश की चाय पिलाने की लेकिन उन्होंने नहीं पी और कुछ ही देर में वो एक “मासूम बच्चे की तरह फूट-फूट कर रोने लगे” बोले मैंने 3 दिन से कुछ भी नहीं खाया है, मैं अपनी 61 वर्षीय माँ को कुछ लोगों के हवाले कर के आया हूँ, पिछले साल से मेरे घर में उनके लिए इतनी मुसीबतें हो गई थी की पत्नी ने कसम खा ली की मैं माँ जी का ध्यान नहीं रख सकती न तो ये उनसे बात करती थी और न ही मेरे बच्चे बात करते थे। रोज मेरे कोर्ट से आने के बाद माँ खूब रोती थी। नौकर तक भी अपनी मनमानी से व्यवहार करते थे। माँ ने 10 दिन पहले बोल दिया बेटा तू मुझे ओल्डऐज होम में शिफ्ट करा दे। मैंने बहुत कोशिशों की पूरे परिवार को समझाने की लेकिन किसी ने माँ से सीधे मुँह बात नहीं की, जब मैं 2 साल का था तब पापा की मृत्यु हो गई थी माँ ने दूसरों के ‘घर में काम कर के मुझे पढ़ाया’ मुझे इस काबिल बनाया की आज मैं जज हूँ। लोग बताते है कि माँ कभी दूसरों के घरों में काम करते वक्त भी मुझे अकेला नहीं छोड़ती थी। उस माँ को मैं वृधाश्रम छोड़ कर आया हूँ पिछले 3 दिनों से मैं अपनी माँ के एक - एक दुख को याद कर रो रहा हूँ, जो उसने केवल मेरे लिए उठाये। मैं दसवीं की परीक्षा में अपीयर होने वाला था, माँ मेरे साथ रात-रात भर बैठी रहती थी।

एक बार माँ को बहुत बुखार हुआ मैं तभी स्कूल से आया था, उसका शरीर गर्म था, तप रहा था, मैंने कहा माँ तुम्हें तो बुखार है माँ हँसते हुए बोली अभी खाना बना रही थी इसलिए गर्म

है लोगों से उधार मांग कर मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय से वकालत तक करवाई। मुझे ट्यूशन तक नहीं पढ़ने देती थी की कही मेरा समय खराब न हो जाए, कहते- कहते रोने लगे और बोले 'जब ऐसी माँ के हम नहीं हो सके तो हम अपनी पत्नी और बच्चों के क्या होंगे। जिनके शरीर के टुकड़े है आज हम उनको ऐसे लोगों के हवाले कर आये जो उनकी आदत, बीमारी, उनके बारे में कुछ भी नहीं जानते। जब मैं ऐसी माँ के लिए कुछ नहीं कर सकता तो मैं किसी और के लिए भला क्या कर सकता हूँ। आजादी इतनी प्यारी और माँ इतनी बोझ लग रही है, तो मैं पूरी आजादी देना चाहता हूँ जब मैं बिना बाप के पल गया तो ये बच्चे भी पल जायेंगे इस लिए मैं तलाक देना चाहता हूँ। सारी जायदाद इन लोगों के हवाले कर के उस वृद्धाश्रम में रहूँगा। कम-से-कम मैं अपनी माँ के साथ रह तो सकता हूँ। और अगर इतना सब कुछ करके माँ आश्रम में रहने के लिए मजबूर है, तो एक दिन मुझे भी आखिर जाना ही पड़ेगा, माँ के साथ रहते - रहते आदत भी हो जाएगी, माँ की तरह तकलीफ नहीं होगी। 'जितना बोल रहे थे उतना रो रहे थे'। बातें करते- करते रात के 12:30 हो गए। मैंने भाभी जी के चेहरे को देखा, उनके भाव भी प्रायश्चित्त और ग्लानि से भरे हुए थे। मैंने ड्राइवर से कहा की हम लोग अभी नोएडा चलेंगे। भाभी जी और बच्चे हम सारे नोएडा पहुँचे। बहुत ज्यादा प्रार्थना करने पर दरवाजा खुला। भाई साहब ने उस गेटकीपर के पैर पकड़ लिए, बोले मेरी माँ है यहाँ, मैं उनको लेने आया हूँ। चौकीदार ने कहा क्या करते हो साहब? भाई साहब ने कहा मैं जज हूँ, उस चौकीदार ने कहा "जहाँ सारे सबूत सामने है तब तो आप अपनी माँ के साथ न्याय नहीं कर पायें" दूसरों के साथ क्या न्याय करते होंगे साहब। इतना कह कर हम लोगों को वहीं रोक कर वह अन्दर चला गया। अन्दर से एक महिला आयी जो वार्डन थी। उसने बड़े कातर शब्दों में कहा '2 बजे रात को आप लोग ले जा के कही मार दे तो मैं अपने ईश्वर को क्या जवाब दूंगी' मैंने सिस्टर से कहा आप विश्वास कीजिए, ये लोग बहुत बड़े पश्चताप में जी रहे हैं। अंत में किसी तरह उनको कमरे में ले गई, कमरे में जो दृश्य था, उसको कहने की स्थिति में मैं नहीं हूँ। केवल एक फोटो जिसमें पूरा परिवार है और वो भी माँ जी के बगल में, जैसे किसी बच्चे को सुला रखा है। मुझे देखा तो उनको लगा की बात न खुल जाए लेकिन जब मैंने कहा हम लोग आप को लेने आए हैं, तो पूरा परिवार एक-दूसरे को पकड़ कर रोने लगा। आस- पास के कमरों में और भी बुजुर्ग थे सब लोग जाग कर बाहर तक ही आ गए उनकी भी आँखें नम थी, कुछ समय के बाद चलने की तैयारी हुई। पूरे आश्रम के लोग बाहर तक आये, किसी तरह हम लोग आश्रम के लोगों को छोड़ पाए। सब लोग इस आशा में देख रहे थे की शायद उनको भी कोई लेने आए। रास्ते भर बच्चे और भाभी जी तो शांत रहे, लेकिन भाई साहब और माताजी एक दूसरे की भावनाओं को अपने पुराने रिश्ते पर बिठा रहे थे। घर आते -आते करीब 3 :45 हो गए, मैं भी चल दिया, लेकिन रास्ते भर वे सारी बातें और दृश्य घूमते रहे। "माँ केवल माँ है" उसको मरने से पहले न मारें। माँ हमारी ताकत है उसे बेसहारा न होने दे, अगर वह कमजोर हो गई तो हमारी संस्कृति की "रीढ़ कमजोर" हो जाएगी और बिना रीढ़ का समाज कैसा होता है किसी से नहीं छुपा है।



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



सुभाष चंद्र बोस

तरुण छिकारा
कल्याण सहायक

सुभाष चंद्र का जन्म – 23 जनवरी 1897 का दिन विश्व इतिहास में सुनहरे अक्षरों में अंकित है। इस दिन स्वतंत्रता आंदोलन के महान नायक नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म ओडिशा प्रांत के कटक में हुआ था। उनके पिता का नाम जानकीनाथ बोस और माता का नाम प्रभाती बोस था।

सुभाष चंद्र की शिक्षा

सुभाष जी को बचपन से ही पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। सुभाष चंद्र जी की प्रारंभिक शिक्षा कटक के एक प्रतिष्ठित स्कूल रेवेंशॉ कॉलेजिएट स्कूल में हुई थी। वे 1913 में मैट्रिक परीक्षा में दूसरे स्थान पर रहे और 1916 में अपनी आगे की पढ़ाई के लिए कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया, जहाँ उनकी मुलाकात डॉ सुरेश बाबू से हुई। कॉलेज में रहते हुए भी उन में स्वतंत्रता संग्राम की झलक दिखी। उन्होंने अपने अंग्रेजी शिक्षक द्वारा भारत के खिलाफ की गई टिप्पणी का कड़ा विरोध किया। जिसके कारण उन्हें कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया था, तब आशुतोष मुखर्जी ने उन्हें 'स्कॉटिश चर्च कॉलेज' में भर्ती कराया था। जहाँ से उन्होंने दर्शनशास्त्र में अपनी प्रथम श्रेणी बी.ए. पूरी की। बी.ए परीक्षा के बाद, पिता के आदेश पर, वह ICS परीक्षा के लिए इंग्लैंड गए। उन्हें इंग्लैंड में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश मिला और वहाँ से आई.सी.एस की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद स्वदेश लौटे और उन्हें यहाँ एक उच्च पदस्थ अधिकारी नियुक्त किया गया।

जीवन और विचार

सुभाष चंद्र बोस भी स्वतंत्रता सेनानियों में से थे जिन्होंने अपने जीवन का बलिदान दिया। जिसके लिए भारतीयों ने देश की स्वतंत्रता के लिए शुरुआत की। सुरेश बाबू देश की सेवा के लिए युवाओं का एक संगठन बना रहे थे। सुभाष चंद्र बोस ने स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन को हमेशा के लिए देश सेवा में समर्पित करने का कठिन संकल्प लिया।

नेताजी के कुछ ऐसे अच्छे विचार जिन्हें हमें देशभक्ति के लिए अपने दिलों में उजागर करना चाहिए।

- (1) सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत व्यक्ति के साथ समझौता करना है।
- (2) हमारे जीवन में हमेशा आशा की किरण है, हमें बस इसे पकड़ना चाहिए, भटकना नहीं चाहिए।
- (3) हमारा जीवन चाहे कितना भी प्रथागत और कष्टमय क्यों न हो, लेकिन हमें हमेशा आगे बढ़ते रहना चाहिए, क्योंकि सफलता कड़ी मेहनत और समर्पण से निर्धारित होती है।
- (4) जो अपनी ताकत पर भरोसा करता है उसे सफलता मिलती है।
- (5) हमेशा अपने जीवन में साहस रखें, मातृभूमि से शक्ति और प्रेम बनाए रखें, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी।

स्वतंत्रता आंदोलन

1920 में गांधीजी ने एक असहयोग आंदोलन शुरू किया जिसमें कई लोग भाग ले रहे थे और इस आंदोलन के कारण लोगों में बहुत उत्साह था। सुभाष चंद्र बोस अरविंद घोष और गांधीजी के जीवन से बहुत प्रभावित थे। कहा जाता है कि 1920 के नागपुर सत्र ने उन्हें बहुत प्रभावित किया।

20 जुलाई 1921 को सुभाष चंद्र बोस पहली बार गांधी जी से मिले। गांधीजी ने सुभाष चंद्र बोस को नेताजी का नाम दिया था। उस दौरान गांधीजी स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे जिसमें लोग बहुत आक्रामक तरीके से भाग ले रहे थे। क्योंकि दास बाबू बंगाल में असहयोग आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे, इसलिए गांधीजी ने बोस को कलकत्ता जाने और दासबाबू से मिलने की सलाह दी।

बोस महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों से सहमत नहीं थे। क्योंकि वह एक गर्म स्वभाव के क्रांतिकारी थे और महात्मा गांधी उदारवादी थे। सुभाष चंद्र बोस और महात्मा गांधी जानते थे कि हमारे विचार एक-दूसरे से नहीं मिलते हैं।

उनकी एक क्रांतिकारी विचारधारा थी। उन्हें कांग्रेस के पूर्ण अहिंसा आंदोलन में विश्वास नहीं था, इसलिए उन्होंने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। इन सभी तालमेलों को नहीं पाने के बाद भी, सुभाष चंद्र बोस ने राष्ट्रपिता के रूप में महात्मा गांधी को संबोधित किया था। उन्होंने देश में हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। उनके गहन क्रांतिकारी विचारों और कार्यों से प्रभावित होकर, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जेल भेज दिया। जेल में, वह भूख हड़ताल पर चले गए, जिससे देश में अशांति फैल गई। परिणामस्वरूप, उन्हें नजरबंद रखा गया।

बोस ने 26 जनवरी, 1942 को पुलिस को चकमा दिया। वे ज़ियाउद्दीन के नाम से काबुल के रास्ते जर्मनी पहुँचे। जर्मन नेता हिटलर ने उनका स्वागत किया। उसके बाद वे जापान गए जहाँ उन्होंने अपनी भारतीय राष्ट्रीय सेना, आजाद हिंद फौज बनाई।

आजाद हिंद फौज की स्थापना

बोस ने देखा कि एक शक्तिशाली संगठन के बिना स्वतंत्रता प्राप्त करना मुश्किल है। 16 मार्च 1939 को, सुभाष ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नया रास्ता देते हुए युवाओं को पूरी निष्ठा के साथ संगठित करने का प्रयास शुरू किया और 4 जुलाई 1943 को सिंगापुर में 'भारतीय स्वतंत्रता सम्मेलन' के साथ शुरू हुआ।



जापान और जर्मनी की मदद से, उन्होंने अंग्रेजों से लड़ने के लिए एक सेना बनाई, जिसका नाम उन्होंने "आजाद हिंद फौज" रखा। 5 जुलाई 1943 को, 'आजाद हिंद फौज' का विधिवत गठन किया गया। नेताजी ने 21 अक्टूबर 1943 को एशिया के विभिन्न देशों में रहने वाले भारतीयों के एक समूह को संगठित करके और एक स्वतंत्र भारत सरकार की स्थापना करके स्वतंत्रता हासिल करने के अपने संकल्प का एहसास किया।

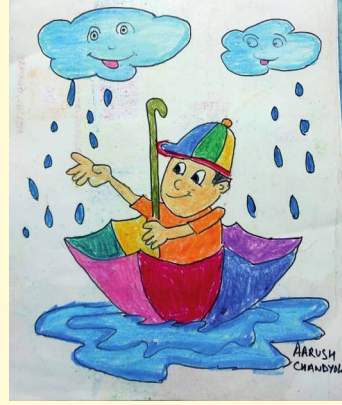
12 सितंबर 1944 को शहीद यतींद्र दास के स्मारक दिवस पर रंगून के जुबली हॉल में, नेताजी ने बहुत ही मार्मिक भाषण दिया – अब हमारी स्वतंत्रता सुनिश्चित है, लेकिन स्वतंत्रता बलिदान की मांग करती है। "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा"। सुभाष चंद्र बोस की इस दहाड़ से अंग्रेजों की शक्ति हिल गई थी। लाखों हिंदुस्तानी लोग इस आवाज के पीछे खुद को बलिदान करने के लिए तैयार थे।

सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु – दूसरे विश्व युद्ध में जापान की हार के कारण आजाद हिंद फौज को भी आत्मसमर्पण करना पड़ा था। जब नेताजी विमान से बैंकॉक से टोक्यो के लिए उड़ान भर रहे थे और माना जाता है कि 18 अगस्त 1945 को एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई थी। लेकिन आज तक नेताजी की मौत का कोई सबूत नहीं मिला। आज भी कुछ लोगों का मानना है कि वह जीवित है। यही कारण है कि देश की स्वतंत्रता पर, सरकार ने उस रहस्य की जांच के लिए एक आयोग का गठन भी किया, लेकिन इसका कोई परिणाम नहीं निकला।

नन्हें बच्चों की कला



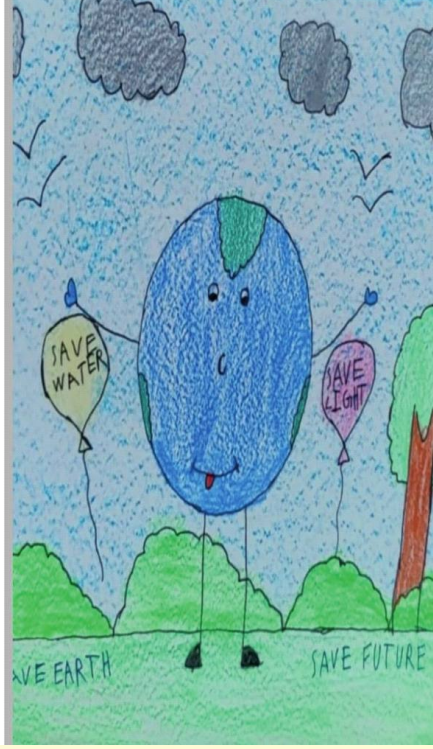
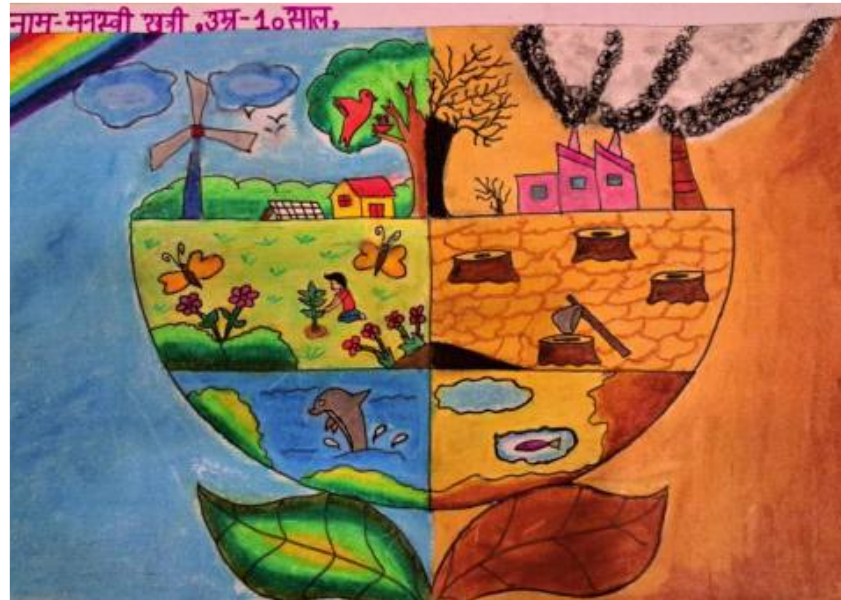
आरुष चन्दयोक



नन्हें बच्चों की कला



मनस्वी खत्री

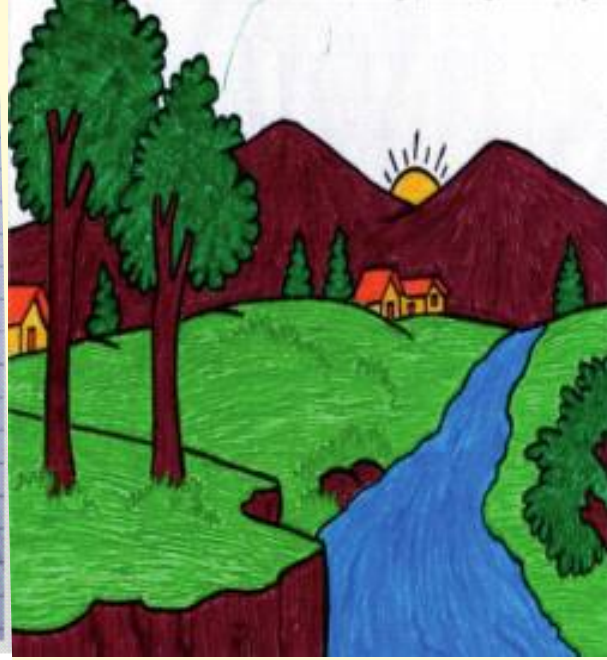


मनस्वी खत्री, सुपुत्री श्री युद्धवीर, सहायक पर्यवेक्षक

नन्हें बच्चों की कला



अंकिता रावत



अंकिता रावत, सुपुत्री श्री संदीप रावत

वो दिन



संदीप रावत
एम.टी.एस.

वो दिन भी क्या दिन थे,
कागज़ की कश्ती थी पानी का किनारा था,
खेलने की मस्ती थी ये दिल आवारा था,
कहाँ आ गए इस समझदारी के दलदल में,
वो नादान बचपन भी कितना प्यारा था।

जहां चाहा वहां रो लेते थे,
जहां चाहा वहां हंस लेते थे,
कभी पेंसिल गुम हो जाती थी,
तो कभी किसी की रबड़ चुरा लेते थे।
वो दिन भी क्या दिन थे,
झूठ बोला करते थे,
फिर भी मन के सच्चे थे,
ये तो उन दिनों की बातें हैं जब हम बच्चे थे।

न कुछ पाने की आशा थी,
न कुछ खोने का डर,
न कुछ ज़रूरी था,
ना किसी की ज़रूरत थी,
बस अपने सपनों का घर था,
और मां की मार का डर था।
वो दिन भी क्या दिन थे,
जब खुशियों का खजाना था,
चांद तारों की चाहत थी,

दादी मां की कहानी थी,
परियों का अपना फसाना था,
हर मौसम सुहाना था,
एक बचपन का जमाना था,
जिस में खुशियों का खजाना था..
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था..
जब थे दिन बचपन के,
वो थे बहुत सुहाने पल,
उदासी से न था नाता,
गुस्सा तो कभी ना आता था.
बारिश के पानी में खुद का एक
जहाज़ था,
न शाम-सुबह का ठिकाना था,
न स्कूल जाने का मन था,
रोने की कोई वजह नहीं थी,
न हंसने का कोई बहाना था,
क्यों हो गए हम इतने बड़े,
इससे अच्छा तो हमारा बचपन का
ज़माना था।
वो दिन भी क्या दिन थे।
वो दिन भी क्या दिन थे।



बबीता

कनिष्ठ, हिंदी अनुवादक

आपदाओं का दौर

यूँ आपदाओं का जो चल पड़ा है दौर,
कोई बताएगा कि इसका ज़िम्मेदार है कौन?
यूँ ज़िन्दगी इतनी सस्ती हो गई,
कि हर प्रगति लाशों की बस्ती हो गई।
खिलखिलाते समाज में पसरा पड़ा है कोहराम,
अपने स्वार्थ में मदमस्त व्यक्ति लगा रहा व्यक्ति के जीवन का दाम।
क्यों समाज में रहना अब फलता नहीं, ये स्वार्थपूर्ण
जीवन लक्ष्य ढलता नहीं।
पर ये स्वार्थ से भरा जीवन कब तक जिओगे?
प्रकृति के हास पर अमृत कब तक पिओगे?
एक दिन प्रकृति भी अपना रौद्र रूप दिखाएगी,
उस दिन यह स्वार्थ से भरी ज़िन्दगी पछताएगी,
उस दिन
यह स्वार्थ से भरी ज़िन्दगी पछताएगी.....

पहेलियां

1. ऐसी कौन सी चीज है, जो बारिश में चाहे जितनी भींगे, वह कभी गीली नहीं हो सकती ?
उत्तर - पानी
2. ऐसी कौन - सी चीज है, जो जगे रहने पर ऊपर रहती है और सो जाने पर नीचे रहती है ?
उत्तर - पलक
3. ऐसी कौन - सी चीज है, जिसकी आँखों में अंगुली डालो तो वह अपना मुँह खोल देती है ?
उत्तर - कैची
4. वह क्या है, जिसके पास एक आँख है फिर भी वह देख नहीं सकती है ?
उत्तर - सुई
5. वह क्या है, जिसमें से आप सब ले लेंगे फिर भी कुछ बच जाएगा ?
उत्तर - सबकुछ
6. ऐसा कौन - सा फल है, जो कच्चा होने पर मीठा लगता है और पकने पर खट्टा लगता है ?
उत्तर - अन्नानास

चुटकुलें

- 1 टीचर - कल होमवर्क नहीं किया तो मुर्गा बनाऊंगा।
छात्र - सर मुर्गा तो मैं नहीं खाता मटर पनीर बना लेना।
- 2 टीचर- 'हिम्मत ए मर्दा तो मदद ए खुदा'
का मतलब बताओ, ?
बच्चा - जो अपनी बीबी के सामने मर्द बनने की कोशिश करता है, उसकी मदद फिर खुदा ही कर सकता है"
- 3 टीचर - इस मुहावरे को वाक्य में प्रयोग करके बताओ - "मुँह में पानी आना "
- 4 छात्र- जैसे ही मैंने नल की टोंटी से मुँह लगाकर नल चालू किया - "मेरे मुँह में पानी आ गया"
टीचर - गेट आउट
- 5 अध्यापक - ताजमहल किसने बनाया ?
सता - जी, कारीगर ने !
अध्यापक - मेरा मतलब, बनवाया किसने था ?
संता - जी, ठेकेदार ने . !!!

मन को बड़ा करो तुम



आरूष चंड्योक

छोटे मन को बड़ा करो तुम,
सारा जग अपना लगता है,
अपना पराया न सोचो तो,
जग अपना कुटुंब लगता है।
किसी दूसरे को धकेलने,
हेतु यदि खोदा जो गड्ढा,
तुम उसमें गिर जाओगे,
पहले करो तुम इसकी चिंता,
अन्य किसी का भला किया तो,
मन हल्का-हल्का लगता है।
छोटे मन को बड़ा करो तुम,
यह परिवर्तन अच्छा लगता है।
खर्च करो, तो धन घटता है,
व्यर्थ करो, तो जल घटता है,
क्रोध करो, तो मन घटता है,
उम्र बढ़े, तो जीवन घटता है,
ज्ञान यदि बाँटा जो जग में
वह बढ़ता-बढ़ता लगता है,
छोटे मन को बड़ा करो तुम
जीवन परिवर्तन अच्छा लगता है।



पॉलिथीन मुक्त भारत



आरूष चंड्योक

मैं हूँ जूट 'बैग', मुझसे करो 'हाय'

पॉलिथीन बैग को करो 'बाय-बाय'

मुझे 'मार्किट' ले जाओ,

फल- सब्जी भर लाओ,

फल- सब्जी खाकर के

तंदुरुस्त तुम हो जाओ ।

मुझे ही अपनाओ,

और पॉलिथीन मुक्त भारत बनाओ ।

अपने भारत को सुन्दर व स्वच्छ बनाओ ।

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



स्वच्छ भारत



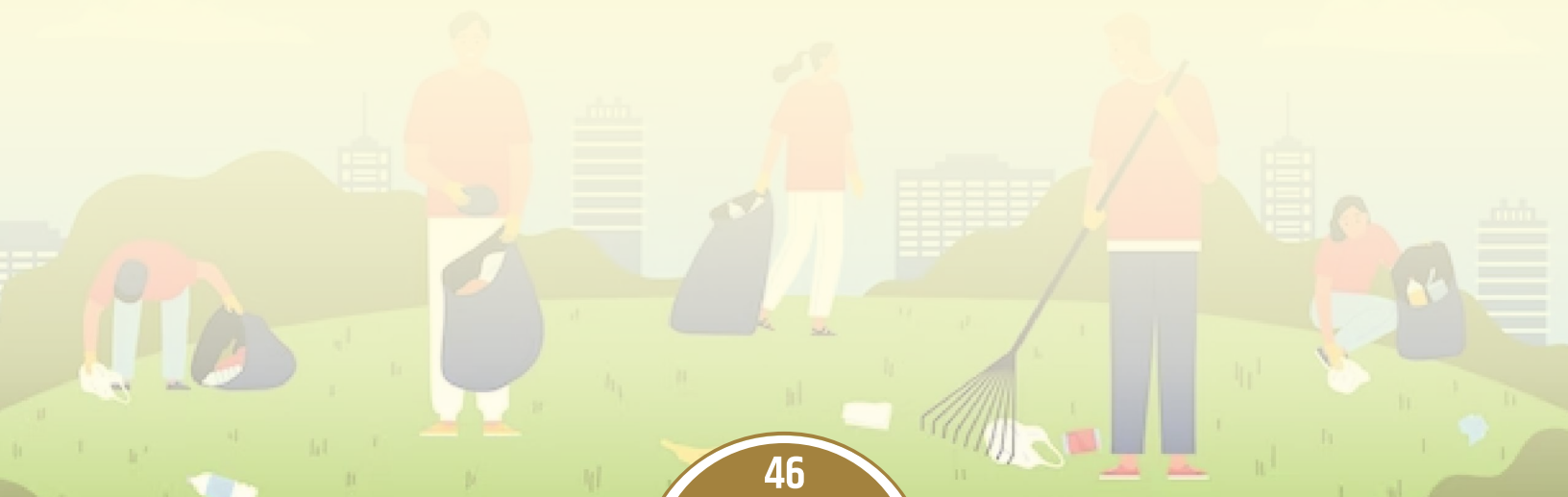
आरूष चंड्योक

छोटा हूँ तो क्या हुआ,
करता हूँ मैं अपना कमरा साफ़ ।
रखता हूँ बिजली- पानी का ध्यान ।
लगाता हूँ पौधे भी, लेकर बड़ों से ज्ञान ।
इस प्रकार छोटा होकर भी देता हूँ,
अपने देश को भरपूर योगदान ।
चलो अपनाएं हम सब यह आदत,
तभी तो बनेगा, अपना देश महान ।

SUPREME AUDIT INSTITUTE OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest



हमारे कार्यालय की कुछ झलकियाँ



कार्यालय के अनमोल पलों की कुछ झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा समारोह-2022 की कुछ झलकियाँ





SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

